सं श्रो श्री शिव श्री हतक | 21-85 | 42359. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ० दी एडिमिनिस्ट्रेंटर नगरपालिका, रोहतक के श्रीमक श्री सोमदत्त तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

स्रौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूनना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूनना की धारा 7 के श्रश्नीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रश्नवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री सोमदत की सेवाग्रों का समापन न्यायायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो०वि०/रोहतक/153-81/42366.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा चण्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक के श्रमिक श्री धर्मवीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग्रेद्वारा प्रदान की गई अक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम-78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम् न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे संसुगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री धर्म वीर सिंह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 24 भ्रक्तूबर, 1985

सं० म्रो॰वि॰/रोहतक/149-85/43536 --चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ मोहन स्पीनिंग मिल, रोहतक के श्रीमिक श्री सुलतान सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम-78/32537, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

नया श्री सुलतान सिंह की सेवायों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि महीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं ० ग्रो०वि०/सोनीपत/145-85/43557.—चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हैडमास्टर संस्कृत हाई स्कूल, बहालगढ़, सोनीपत के श्रमिक श्री शेर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

म्रोर चूंकि हरियाणा राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है ;

इस लिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वीरा प्रदान की गईं शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की बारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जी कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या भी शेर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह कि राहृत का हकदार है ?